REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 9 | JUNE - 2022

# तुलसीदास और सामाजिक परिप्रेक्ष्य

आशुतोष मिश्र
हिंदी विभाग, महामाया राजकीय महाविद्यालय श्रावस्ती

तुलसीदास के समय मुगल साम्राज्य स्थापित था। इस्लाम कट्टर था उनके एक हाथ में कुरान और दूसरे में तलवार थी। हिंदू मानस प्रवाह के विपरीत वह कविता का एक नैराश्य काल था, जिसमें कविता भक्तिपथ और प्रेमपथ की ओर चली। सच्चे धार्मिक भाव का ह्रास हो चुका था सभी अपनी ढपली अपना राग बजा रहे थे। इस समय ऐसे मार्गदर्शक की आवश्यकता थी जनमानस को संबल देकर राह दिखा सकता।

साहित्य का सम्बंध लोक समाज संस्कृति धर्म दर्शन कला परम्परा राजनीति मनोविज्ञान यथार्थ नैतिकता मूल्य और सत्य तथा समानता से होता है। साहित्य समाज की भविष्यगत संभावना है। इसमें जीवन समाज और लोककल्याण तथा मनोवैज्ञानिक स्थितियां तात्कालिक राजनीतिक सांस्कृतिक सामाजिक परिस्थियां प्रकट होती हैं, जिससे तत्कालीन समय समाज के विषय में जानकारी मिलती है।

संत तुलसी ने अपने समय की परिस्थितियों का यथातथ्य वर्णन किया। कलियुग वर्णन उसका विशेष अंग है। कवितावली दोहावली और गीतावली में भी युग वर्णन है। उस काल में राज व्यवस्था भ्रष्ट थी -- 'नृप पाप परायन धर्म नहीं। करि दण्ड विडण्ड प्रजा नित हीं।'1 कलिकाल में सारे मूल धर्म नष्ट हो गए -- 'कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सद्ग्रंथ। दम्भिन निज मति कल्प करि प्रकट किए बहु पंथ।।'2 कवितावली में उन्होंने समय समाज का चित्रण किया कि किसानी व्यापार और आजीविका पर संकट था -'खेती न किसान को भिखारी को न भीख भलि/बनिक को न बनिज न चाकर को चाकरी/ जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोचवश/ कहै एक एकन सो कहॉ जाई का करी।।'3

इस तरह संत कवि ने उस समय समाज का सही त्रासद चित्र खींचा। स्त्रियों की दशा का वे सदैव अवलोकन करते हैं – 'कुलवंत निकारहिं नारि सती। गृह आनहिं चेरि निवेरि गती। कलिकाल विहाल किए मनुजा। नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा।।4 इसीलिए वे कहते हैं - 'कत विधि सृजीनारि जग माही। पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।।'5 यह भी कहते हुएस्पष्ट संकेत देते हैं - ' अनुज बधू भगिनी सुतनारी। जानेहुँ एहि कन्या सम चारि। इन्हई कुदृष्टि विलोकइ जेई। ताहि बधे कछु पाप न होई।।'6 मर्यादा का ध्यान उन्होंने सदैव रखा-- जगत मातु पितु संभु भवानी। तेहि सिंगारन कहहुँ बखानी।'7 अकबर के दीन ए इलाही को स्वयं मान सिंह स्वीकार न कर सके स्यात् यह नए कलेवर में नए धर्म का प्रवर्तक बनने की ऐष्णा हो। वह समय समाज तो इस्लाम का पर्याय बन चुका था हिंदू स्त्रियों को बड़ी संख्या में दास बना लिया जाता था बंदीजन की तरह वह रहने को विवश थीं। मुहम्मद बिन तुगलक ने एक एक सौ स्त्री पुरुषों को चीन सम्राट् के पास उपहार स्वरूप भेज दिया था। कठोर अत्याचार हिंदू स्त्रियों का अपहरण उन्हें काफिर घोषित करना तथा धर्म परिवर्तन कराना इस्लाम की सांस्कृतिक उपलब्धि बन चुकी थी। विराट् सनातन संस्कृति के चरमोत्कर्ष हेतु युगानुरूप उन्नायक तुलसीदास ने करुण परिस्थितियों को सृजनशील आयाम देने का कार्य किया तथा मनोवैज्ञानिक समाधान कर कलिमलहरनी रामचरितमानस की रचना कर सभी को आकृष्ट किया। समय की आवश्यकता सगुण को लक्ष्य कर सगुण राम की बात की ताकि हर तरह से पीड़ित भटकते भ्रमित होते समाज को राह दिखा सकें। सहज सरल भक्ति और कर्म की प्रेरणा के सहारे उन्होंने तत्कालीन समाज को दिशा दी तथा स्वाभिमान का संदेश दिया। 'मांगि के खात मसीज में सोवत जानत जानहुँ रामदुलारे, तथा 'कोउ होइ नृपहिं हमहिं का हानी' इसी संदर्भ उन्होंने कही और अकबर का प्रस्ताव ठुकरा दिया मिलने से इंकार किया।

आरार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में - 'देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिंदू जनता के हृदय में गौरव गर्व और उत्साह के लिए अवकाश न रह गया। उनके सामने ही उनके देव मंदिर गिराए जाते थे,देव मूर्तियांतोड़ी जाती थीं और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ नहीं कर सकते थे।'8

इसीलिए तुलसीदास के नायक घोषणा करते हैं ' निसिचर हीन करहुँ महि भुज उठाय पन कीन्ह।'9

युगीन परिस्थितियों का वर्णन तुलसीदास ने अनेक स्थल पर किया : 'पेट को पढ़त गुन गढ़त चढ़त गिरि/अटत गहन - गन अहन अखेटकी/ऊँचे नीचे करम/धरम अधरम करि/पेट की हो पचत बेचत बेटा बेटकी/ तुलसी बुझाई एक राम घनश्याम ही तें/आगि बड़वागि ते बड़ी है आगि पेट की।'10 इसी प्रकार कवितावली के अन्य अंश द्रष्टव्य हैं ' राजकाज कुपथ कुसाज भोग रोग ही के/ xxx /कियो कलिकाल कुलि खलचु खलक ही/ कलिको कलुष मन मलिन किए महत/मसक की पॉसुरी पयोधि पाटियतु ह।'11

कलि की करालता को देख वे कहते हैं ' सुनिए कराल कलिकाल भूमिपाल! तुम्ह /जाहि घालो चाहिए कहौ धों राखे ताहि को!'12xx 'तुलसी विलोकि कलिकाल की करालता/कृपालु को समानु समुझत सकुचात हैं/लोक एक भॉति को त्रिलोकनाथ लोकबस/ आपुनो न सोचु स्वामी सोच ही सुखात हैं।'12

मयूर सा शोभा प्रदर्शन किंतु कपट कुचाल से युक्त समाज का चित्रण तुलसी ने किया :' हृदय कपट वर वेष धरि बचन कहहिं गढ़ बोलि। अब के लोग मयूर ज्यों क्यों मिलिए मन खोलि।।13 वे कहते हैं कि रामायण सभी देखते जानते हैं पर संसार में महाभारत की ही रीति है ' रामायन अनुहरत सिख जग भयो भारत रीति। तुलसीदास उनकी को सुनै कलि कुचाल पर प्रीति।।'14 और भी उक्ति है ' असुभ भेष भूषन धरैं भच्छाभच्छ जे खाहिं। तेइ जोगी ते सिद्ध नर पूज्य ते कलियुग माहिं।।'15 लोग तरह तरह की रचना कर अनेक मार्ग और धर्म प्रवर्तित करेंगे और मूल धर्म को नष्ट करेंगे ' साखी शबदी दोहरा कहि कहनी उपखान। भगति निरूपहिं भगत कलि निंदहिं वेद पुरान।।'16 कलियुग का राजा सेवक नहीं बल्कि दिशाहीन होगा जो अधिक से अधिक कर संग्रही तथा स्वहित स्वार्थ हेतु केवल कठोर दंड देने वाला होगा ' गोंड गंवार नृ पाल महि जमन महा महिपाल। साम न दाम न भेद करि केवल दंड कराल।।'17xx'राज करत बिनु काज ही उटहि जे क्रूर कुठाल। तुलसी तें कुरुराज ज्यों जइहैं बारह बार।।'18' ऐसे समय कोयल सदृश सज्जन मौन रहते हैं और बरसाती मेढ़कों का ही स्वर सुनायी पड़ता है 'तुलसी पावस के समय धरी कोकिलन मौन। अब तो दादुर बोलिहैं हमें पूछिहैं कौन।।18 अंततः कवि केयुग चित्रण का निकष देखें ' कलि पाखण्ड प्रचार प्रबल पाप पामर पतित । तुलसी उभय अधार रामनाम सुरसरि सलिल।।19

अतएव भक्त तुलसीदास अपनी रचनाओं युगीन सामाजिक सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृश्य का व्यापक चित्रण करने में सफल हैं और श्रेष्ठ लोकाचार राजाचार हेतु मार्गदर्शन भी देते हैं। यह उनके काव्य को यथार्थपरक बनाता है।

01- दोहावली, कलिवर्णन तुलसीदास, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण 2020,पृ. 560
02- रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, तुलसीदास,गीताप्रेस, गोरखपुर,पृ. 879/2020
03- कवितावली, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर,पृ. 112
04- रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, पृ. 881/2020
05- रामचरितमानस, तुलसीदास, प्रतियोगिता साहित्य सीरीज,पृ. 135/2018
06- रामचरितमानस, तुलसीदास, प्रतियोगिता साहित्य सीरीज,पृ. 382/2020
07- रामचरितमानस, तुुलसीदास, प्रतियोगिता साहित्य सीरीज पृ. , 834/18
08- हिंदी भाषा साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग विवेचन, डॉ. रामअजोर सिंह, डॉ. रामशंकर त्रिपाठी,भवदीय प्रकाशन, श्रृंगारहाट, अयोध्या पृ. 73/2007
09- रामचरितमानस, तुलसीदास, प्रतियोगिता साहित्य सीरीज पृ. 167/2018
10- कवितावली, तुलसीदास, गीताप्रेस गोरखपुर,पृ. 112/2020
11- कवितावली, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर,पृ. 113/2020
12- कवितावली, तुलसीदास, गीताप्रेस गगोरखपुर,पृ.125/2020
13- दोहावली, तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर,पृ. 332/112/2020
14- दोहावली, तुलसीदास, गीताप्रेस गोरखपुर,पृ. 11/83/2020

15- **दोहावली**, **तुलसीदास**, **गीताप्रेस गोरखपुर**,**पृ**. 550/185/2020
16- **दोहावली**, **तुलसीदास**, **गीताप्रेस गोरखपुर**,**पृ** 554/186/2020
17- **दोहावली**, **तुलसीदास**, **गीताप्रेस गोरखपुर**, **पृ**.559/187/2020
18- **दोहावली**,**तुलसीदास**, **गीताप्रेस गोरखपुर**, **पृ**. 417/140/2020
19- **दोहावली**, **तुलसीदास**, **गीताप्रेस**, **गोरखपुर**,**पृ**. 566/190/2020